1. परिचय

बी0टी0सी0 (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) रूपरेखा

वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, बाल–मनोविज्ञान तथा बच्चों के सीखने–लिखने की प्रक्रिया एवं बालगत मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रारम्भिक शिक्षा के शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु नवीन शिक्षण–विधियों, तकनीकों, शैक्षिक–नवाचारों एवं समसामयिक विषयवस्तु को द्विवर्षीय बी0टी0सी0 पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया है।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को चार सेमेस्टर में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ष में दो सेमेस्टर तथा द्वितीय वर्ष में दो सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर 6 माह (न्यूनतम 120 शैक्षिक दिवस एवं 10 परीक्षा दिवसों) का होगा।

सेमेस्टरवार विषय विभाजन सारिणी : प्रत्येक सेमेस्टर के अन्तर्गत दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र व विभिन्न विषयगत प्रश्नपत्र एवं एक माह का इण्टर्नशिप समाहित किया गया है। जिनका विवरण निम्नवत् है:–

प्रथम सेमेस्टर	द्वितीय सेमेस्टर	तृतीय सेमेस्टर	चतुर्थ सेमेस्टर
सैद्धान्तिक विषय			
बाल विकास एवं सीखने की प्रक्रिया(edu 01)	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा (edu 03)	शैक्षिक मूल्यांकन, क्रियात्मक शोध एवं नवाचार (edu 05)	आरम्भिक स्तर पर भाषा के पठन/लेखन एवं गणितीय क्षमता का विकास (edu 07)
शिक्षण अधिगम के सिद्वान्त (edu 02)	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास (edu 04)	समावेशी शिक्षा (edu 06)	शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन (edu 08)
सामान्य विषय			
विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान	विज्ञान
गणित	गणित	गणित	गणित
सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन	सामाजिक अध्ययन
हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी	हिन्दी
संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी	संस्कृत/उर्दू	अंग्रेजी
कम्प्यूटर शिक्षा	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	कम्प्यूटर शिक्षा	शांति शिक्षा एवं सतत विकास
कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)	कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य शिक्षा (सैद्धान्तिक/प्रायोगिक)
इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप	इण्टर्नशिप

www.dietmathura.org

कला/संगीत/शारीरिक शिक्षा/स्वास्थ्य में से किसी एक विषय का चयन प्रशिक्षु द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में किया जाएगा, जिसका मूल्यांकन विषयाध्यापक द्वारा ही किया जाएगा, इसी प्रकार समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (एस0यू0पी0डब्लू0) विषय का भी मूल्यांकन मात्र विषय अध्यापक द्वारा ही किया जाएगा। इन विषयों की लिखित/वाह्य परीक्षा नही होगी।

बी0टी0सी0 द्विवर्षीय प्रशिक्षण हेतु पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों की योजना

प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संज्ञानात्मक पक्ष के साथ–साथ संज्ञान सहगामी पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। पाठ्यक्रम में निहित विषयों के द्वारा जहाँ ज्ञानात्मक योग्यता का विकास होता है वहीं पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के द्वारा उनके शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा कौशलात्मक पक्ष का विकास होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए बी0टी0सी0 प्रशिक्षण में भी इन क्रियाकलापों को समाविष्ट करने की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक प्रशिक्षु इनमें भाग लेकर इन गतिविधियों में कुशलता प्राप्त करके विद्यालयों में प्रभावी व नियोजित तरीके से इनका आयोजन करा सके व बच्चों के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे सकें।

प्रशिक्षण की सम्पूर्ण अवधि में प्रत्येक सेमेस्टर में निम्नलिखित पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों का आयोजन नियमित रूप से समय–समय पर अनिवार्य रूप से कराया जाए–

1. राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पर्वों/दिवसों का आयोजन

- गणतंत्र दिवस– 26 जनवरी, स्वतंत्रता दिवस– 15 अगस्त, गाँधी जयन्ती– 2 अक्टूबर
- विश्व पर्यावरण दिवस– 5 जून, शिक्षक दिवस– 5 सितम्बर, मानवाधिकार दिवस– 10 दिसम्बर

2. खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन– राज्य स्तर, मण्डल स्तर तथा जनपद स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिताओं का तथा सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संध्या का आयोजन।

- कबड्डी, खो–खो, बैडमिण्टन, बॉलीवाल, कैरम, शतरंज
- विभिन्न प्रकार की दौड़, लम्बी कूद
- भाला फेंक, चक्का फेंक, गोला फेंक

3. साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- निबन्ध लेखन, सुलेख, प्रश्नमंच, वर्तमान के शैक्षिक मुद्दों/समस्या परिचर्चा/वाद–विवाद
- आशुभाषण/आशुलेखन
- काव्यगोष्ठी
- अन्त्याक्षरी (कविता, दोहे, चौपाई, छन्द आदि पर) आधारित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
- कविता/कहानी लेखन (स्वरचित), स्लोगन लेखन

4. सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- गायन प्रतियोगिता–देशगीत, समूह गीत, भजन, लोकगीत, क्षेत्रीय भाषाओं के गीत, गज़ल, कव्वाली।
- नृत्य प्रतियोगिता–एकल नृत्य, समूह नृत्य
- वादन प्रतियोगिता–तबला, बांसुरी, सितार, गिटार, ढोलक
- अभिनय प्रतियोगिता–नाटक, एकांकी, मूक अभिनय

5. कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन

- मेंहदी प्रतियोगिता, पुष्प सज्जा, रंगोली एवं अल्पना प्रतियोगिता।
- पेन्टिंग, पोस्टर/कोलाज निर्माण, आडियो/वीडियो क्लिप।

www.dietmathura.org

- ❖ अनुपयोगी वस्तुओं से कलात्मक व उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।
- ❖ कढ़ाई/बुनाई प्रतियोगिता, कलमदान, फूलदान, फोटोफ्रेम बनाना व साज–सज्जा।
- ❖ मिट्टी/पी0ओ0पी0 के खिलौने का निर्माण।

6. संस्थान परिसर, प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में वृक्षारोपण तथा परिसर का सुन्दरीकरण।

7. टी0एल0एम0 मेले का आयोजन/विज्ञान–क्लब/पर्यावरण क्लब निर्माण व विज्ञान मेले का आयोजन।

8. आई0सी0टी0 आधारित कक्षा–शिक्षण प्रतियोगिता।

8. स्काउट/गाइड शिविर का आयोजन।

9. शैक्षिक भ्रमण का आयोजन।

www.dietmathura.org

द्वितीय सेमेस्टर

क्रम संख्या	विषय	दिनों की संख्या	कालांश (न्यूनतम)	समूह चर्चा/प्रोजेक्ट कालांश (न्यूनतम)
1	विज्ञान	—	50	30
2	गणित	—	50	30
3	सामाजिक अध्ययन	—	75	30
4	हिन्दी	—	45	15
5	अंग्रेजी	—	60	30
6	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य	—	45	15
7	शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य/कला एवं संगीत	—	15	—
8	वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा	—	75	15
9	प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास	—	75	15
10	कक्षा शिक्षण/इण्टर्नशिप	30	—	—
11	परीक्षा	10		
	योग		**योग—490**	**योग—210**

www.dietmathura.org

वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा

उद्देश्य

- शिक्षा की आवश्यकता, महत्व और उद्देष्य से अवगत कराना एवं सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका से अवगत कराना।
- प्राचीन, मध्यकालीन एवं वर्तमान में भारतीय शिक्षा के स्वरूप एवं व्यवस्था की जानकारी देना।
- विविध शैक्षिक विचारधाराओं का महत्व एवं आधुनिक शिक्षा में उनकी उपयोगिता से अवगत कराना।
- वर्तमान भारतीय समाज में होने वाले मूल्य परिवर्तनों एवं उसके शिक्षा जगत में पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देना।
- नवीन शैक्षिक समस्याओं एवं चुनौतियों का निर्धारण एवं योजनाबद्ध तरीके से निराकरण में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सैद्धान्तिक विषय–edu 03

वर्तमान भारतीय समाज और प्रारम्भिक शिक्षा

कक्षा षिक्षणः विषयवस्तु

खण्ड 'क' प्रारम्भिक शिक्षा

- शिक्षा की संकल्पना, अर्थ (प्राचीन तथा अर्वाचीन) एवं महत्व
- शिक्षा के उद्देष्य एवं वर्तमान भारत में शिक्षा के उद्देष्यों को प्रभावित करने वाले कारक
- शिक्षा के प्रकार – औपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा
- प्रारम्भिक शिक्षा की पृष्ठभूमि
  - प्राचीन काल (गुरुकुल एवं बौद्धकालीन शिक्षा)
  - मध्यकालीन शिक्षा (मुगलकालीन शिक्षा)
  - आधुनिक शिक्षा (स्वतन्त्रता के पूर्व एवं पष्चात)
- प्रमुख शैक्षिक विचारधाराएँ एवं विचारक
  - आदर्षवाद
  - प्रकृतिवाद
  - प्रयोजनवाद
  - भारतीय विचारक – विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, डॉ0 राधाकृष्णन, गिजूभाई वधेका
  - पाष्चात्य विचारक – प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, फ्रोबेल, मारिया मॉन्टेसरी

खण्ड 'ख' शिक्षा और समाज

- शिक्षा और समाज का अन्तः सम्बन्ध
- शिक्षा के प्रभावी कारक–परिवार, समाज, विद्यालय, राज्य एवं जनसंचार साधन
- शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन–सामाजिक परिवर्तन के कारक
- विद्यालय और समुदाय का सम्बन्ध–विद्यालयः सामुदायिक केन्द्र के रूप में
- उभरते समाज के प्रमुख मुद्दे –
  - शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं शैक्षिक अवसरों की समानता
  - शिक्षा का व्यावसायीकरण एवं इस पर नियन्त्रण
  - बचपन छीनता बालश्रम–निःशुल्क व अनिवार्य बाल शिक्षा में बाधक
  - जनसंख्या शिक्षा–अर्थ, आवश्यकता, महत्व एवं समयानुरूप मानव संसाधन का विकास

www.dietmathura.org

- जातिवाद, अलगाववाद, साम्प्रदायिकता एवं इसके दुष्परिणाम, सामाजिक/पारस्परिक सौहार्द व समरसता वर्तमान आवश्यकता
- पर्यावरण प्रदूषण एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुकता
- जलसंचयन–ऊर्जा एवं भूमि संरक्षण
- भूमण्डलीय ताप वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) एवं जलवायु परिवर्तन
- भूमण्डलीकरण
- लैंगिक असमानता तथा उसका प्रभाव, शिक्षा द्वारा लैंगिक समानता के प्रति समझ व संवेदनशीलता का विकास
- जनसंचार माध्यमों की बढ़ती भूमिका और समाज पर इनका बहुअयामी प्रभाव

■ शिक्षा एवं मानवीय मूल्य
- मानवीय मूल्यों की शिक्षा–अर्थ एवं उद्देष्य
- मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और विद्यालय की भूमिका
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की शिक्षा
- लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण का विकास

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को वर्तमान भारतीय समाज एवं प्रारम्भिक शिक्षा के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न शैक्षिक चुनौतियों एवं निराकरण के उपायों की सारिणी बनाना।
- भारतीय एवं पाश्चात्य विचारकों के शैक्षिक विचारों की तुलना करना।
- निम्नलिखित प्रकरणों पर मॉडल/चार्ट/कहानी/केस स्टडी/पेंन्टिंग तैयार करना –
  - बचपन छीनता बालश्रम
  - जातिवाद, अलगाववाद, सांप्रदायिकता
  - लैंगिक असमानता
  - ग्रामीण एवं शहरी शिक्षा, सरकारी एवं निजी विद्यालयी शिक्षा
  - अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव
- मानवीय व नैतिक मूल्यों पर आधारित कहानियों, कविताओं, प्रेरक प्रसंगों का लेखन एवं संकलन।
- प्रकृतिवाद एवं प्रयोजनवाद को पॉवर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों पर मॉडल/चार्ट/पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण तैयार करना।
- 'जनसंचार माध्यमों का शिक्षा पर प्रभाव' विषय पर मॉडल/प्रस्तुतीकरण/वीडियो क्लिप तैयार करना।

www.dietmathura.org

प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास

उद्देश्य

- प्राथमिक षिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु संवैधानिक प्राविधानों एव प्रतिबद्धताओं से अवगत कराना।
- प्राथमिक षिक्षा के विकास हेतु संचालित विभिन्न कार्यक्रम एवं परियोजनाओं की जानकारी देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–edu 04

प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

1. प्रारम्भिक षिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु संवैधानिक प्राविधान एवं प्रतिबद्धताएँ

- संविधान के अनुच्छेद 21(ए), 29(2) एवं 45 के अन्तर्गत षिक्षा सम्बन्धी संस्तुतियाँ।
- बच्चों के अधिकार (बाल अधिकार)।
- निःषुल्क एवं अनिवार्य बाल षिक्षा अधिकार अधिनियम–09 (RTE.09)।

2. प्रारम्भिक षिक्षा के संदर्भ में गठित आयोग एवं समितियां

- स्वतंत्रता के पूर्व एवं पष्चात की संक्षिप्त जानकारी
- लार्ड मैकाले की षिक्षा नीति, वुड का घोषणापत्र, हण्टर आयोग, ऑकलैण्ड एवं कर्जन का योगदान
- कोठारी आयोग
- राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 एवं प्रोग्राम ऑफ एक्षन 1992
- यषपाल समिति
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (NCF 2005)
- षिक्षक षिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2009 (NCFTE 2009)

3. प्रारम्भिक षिक्षा के विकास हेतु संचालित कार्यक्रम एवं परियोजनाएं (उ0प्र0 के संदर्भ में) विभिन्न

- ऑपरेषन ब्लैक बोर्ड परियोजना (OB)
- सेवारत अध्यापकों का विस्तृत अभिविन्यास कार्यक्रम (P-MOST)
- प्राथमिक षिक्षकों का विषेष अनुस्थापन कार्यक्रम (SOPT)
- बेसिक षिक्षा परियोजना (BEP)
- जिला प्राथमिक षिक्षा कार्यक्रम (द्वितीय एवं तृतीय) (DPEP)
- विद्यालय षिक्षा की तैयारी (स्कूल रेडीनेस) कार्यक्रम
- सम्पूर्ण साक्षरता अभियान
- सर्व षिक्षा अभियान
- NPEGEL–नेषनल प्रोग्राम ऑफ एजूकेषन फॉर गर्ल्स एट एलीमेन्ट्री लेवल
- स्कूल चलो अभियान
- कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय योजना
- ई0सी0सी0ई0 कार्यक्रम
- राष्ट्रीय बालश्रम परियोजना
- मध्याह्न भोजन/पोषाहार वितरण
- छात्रवृत्ति वितरण एवं अन्य प्रोत्साहन योजनाएं
  (निःषुल्क पाठ्यपुस्तक, गणवेष, बच्चों हेतु फर्नीचर)

www.dietmathura.org

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- लार्ड मैकाले, वुड, हण्टर, ऑकलैण्ड एवं कर्जन के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 एवं प्रोग्राम ऑफ एक्षन 1992 की प्रासंगिकता से सम्बन्धित लेख, चार्ट तैयार करना।
- विद्यालयों का भ्रमण कर उनका प्रोफाइल तैयार करना।
- जिला प्राथमिक षिक्षा कार्यक्रम एवं सर्व शिक्षा अभियान का तुलनात्मक अध्ययन
- मध्यान्ह भोजन, पोषाहार वितरण पर वीडियो क्लिप/चार्ट/कहानी तैयार करना।
- विकासखण्ड/जनपद के शैक्षिक परिदृश्य पर विश्लेषणात्मक रिर्पोट तैयार करना।

www.dietmathura.org

विज्ञान

उद्देष्य

- वैज्ञानिक सोच, क्या, क्यों, कैसे,..... को विकसित करना। रू रु
- विज्ञान की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- प्रशिक्षु को विषयवस्तु परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक संकल्पनाओं को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- विज्ञान की विषयवस्तु को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/प्रयोग तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्यागिकी (आई0सी0टी0) के माध्यम से कठिन संकल्पनाओं को सरल तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को विज्ञान की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- विज्ञान शिक्षण में विभिन्न प्रकरणों की वैज्ञानिक विधियों (पैडागॉजी) को अपनाये जाने का कौशल विकसित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर सभी प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

नोट–विज्ञान शिक्षण से सम्बन्धित विषयवस्तु के कक्षा–शिक्षण से पूर्व एवं पश्चात् विभिन्न शिक्षण विधाओं जैसे–प्रयोग विधि, प्रयोग–प्रदर्शन विधि, परिवेशीय भ्रमण विधि, प्रेक्षण विधि, सूक्ष्मावलोकन, वर्गीकरण, विचार–विमर्श, समस्या–समाधान विधि, अन्वेषणात्मक विधि, संग्रह–विधि, समूह–चर्चा विधि एवं प्रश्नोत्तर–विधि पर व्यापक चर्चा की जाए।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–2

विज्ञान

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- पृथ्वी और आकाश : सौर परिवार एवं तारा मण्डल, छाया एवं ग्रहण, आकाशीय पिण्ड, पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के कारण तथा अन्य ग्रहों पर जीवन की संभावना, भारत व विश्व के अन्य देशों के प्रमुख अंतरिक्ष अभियान।
- मृदा तथा फसलें : फसल–चक्र, कृषि पद्धतियां तथा उसके उपकरण। कीटनाशक : प्रयोग व पर्यावरण पर उसके दुष्प्रभाव। मृदा अपरदन व संरक्षण (कृषि विधियां)।
- कार्य व ऊर्जा : कार्य तथा ऊर्जा का मापन व आवश्यकता, ऊर्जा के विभिन्न रूप (यांत्रिक, रासायनिक, ध्वनि, प्रकाश, विद्युत व आवेशीय) ऊर्जा का अपव्यय व संरक्षण, ऊर्जा के विभिन्न स्रोत। ऊर्जा के सीमित व असीमित स्रोत : विकास एवं उपयोग। जैसे सौर ऊर्जा के उपयोगः सोलर कुकर, सौर सेल, जल उष्मक, पवन ऊर्जा के उपयोगः पवन चक्की, ज्वार भाटा आधारित ऊर्जा तथा नाभिकीय ऊर्जा, विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं का अन्तः रूपान्तरण।
- सरल मशीनेंः प्रकार, (उत्तोलक, पेंच, घिरनी, झुका तल, पहिया), दैनिक जीवन में उपयोग।
- जीवों की संरचनाः कोशिका–ऊतक–अंग–अंगतंत्र–जीव कोशिका की खोज, संरचना, कोशिकांग व उनके कार्य।
- जीवन की क्रियायेंः पोषण, श्वसन, उत्सर्जन, संवेदनशीलता, प्रकाश संश्लेषण, वृद्धि व प्रजनन, वाष्पोत्सर्जन।
- मानव शरीर के अंग एवं कार्यः मानव कंकाल, पेशियां एवं पेशीय गतियाँ, दाँतों की संरचना, पाचन पंत्र, परिसंचरण तंत्र।
- भोजन, स्वास्थ्य एवं रोगः भोजन के प्रमुख पोषक तत्व/प्रमुख घटक (प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइट्रेड, विटामिन तथा मिनरल), संतुलित आहार, पोषक तत्वों की कमी से होने वाले रोग, परिवेशीय स्वच्छता एवं स्वास्थ्य, संक्रामक रोग व उनकी रोकथाम, टीकाकरण अभियान।
- तत्वों का वर्गीकरण, परमाणु/परमाणवीय संरचना, संयोजकताः रासायनिक अभिक्रिया, रसायन की भाषा व रासायनिक सूत्र।
- पास–पड़ोस में होने वाले परिवर्तनः नियमित व अनियमित तथा भौतिक व रासायनिक परिवर्तन, इन परिवर्तनों में ऊर्जा, ऊष्मा का आदान प्रदान।
- अम्ल, क्षार व लवणः पहचान व विशिष्ट गुण।
- पर्यावरण प्रदूषणः जल, वायु, ध्वनि तथा मृदा प्रदूषण, इनके कारण एवं प्रभाव। प्राकृतिक आपदाएं कारण, उपाय एवं प्रबन्धन (भूकंप, तूफान, बाढ़, सूखा आदि)।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः विज्ञान के प्रत्येक पाठ से प्रशिक्षु शिक्षकों को उस पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिये एक प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- चन्द्रमा की कलाएँ, सूर्य ग्रहण–चन्द्र ग्रहण स्पष्ट करने का मॉडल निर्माण करें।
- ऊर्जा के रूपांतरण को स्पष्ट करने का मॉडल निर्माण करें (जैसे–रासायनिक ऊर्जा का यांत्रिक ऊर्जा में परिवर्तन)।

www.dietmathura.org

- विभिन्न प्रकार की मिट्टी की विविधताओं को स्पष्ट करने हेतु प्रोजेक्ट/मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- प्रकाश के परावर्तन व अपवर्तन को स्पष्ट करने हेतु प्रोजेक्ट/मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- विभिन्न प्रकार के दर्पणों पर आधारित प्रोजेक्ट/मॉडल/गेम तैयार करें।
- विभिन्न प्रकार के लेंसों के माध्यम से उनकी विशिष्टताओं को स्पष्ट करने हेतु प्रोजेक्ट/मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- विभिन्न प्रकार की मशीनों की कार्यप्रणाली समझाने हेतु प्रोजेक्ट/मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- पोषण, श्वसन, उत्सर्जन, संवेदनशीलता, प्रकाश संश्लेषण, प्रजनन, वाष्पोत्सर्जन पर आई0सी0टी0 आधारित प्रोजेक्ट/मॉडल तैयार करें।
- मानव कंकाल, पेशियां एवं पेशीय गतियाँ, दाँतों की संरचना, पाचन पंत्र, परिसंचरण तंत्र पर प्रोजेक्ट/मॉडल/चार्ट तैयार करें।
- अपने शहर/गांव की केस स्टडी निम्नवत् बिन्दुओं पर तैयार कीजिए :–
    - स्थानीय परिवेश के बच्चों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, कारण, निवारण, उपाय व उपचार।
    - पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार, स्थिति व उसका मानव जीवन पर प्रभाव।

www.dietmathura.org

गणित

उद्देष्य

- प्रशिक्षु को गणित में प्रयुक्त होने वाले गणितीय शब्दों, गणितीय संक्रियाओं तथा चिह्नों के मध्य सम्बन्धों की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु की जानकारी एवं उसकी अवधारणा की समझ विकसित करना।
- गणित की विषयवस्तु को परिवेश में उपलब्ध संसाधनों/सामग्रियों/बच्चों की गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु की उपयोगिता और आवश्यकता को रुचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित टी0एल0एम0/गतिविधि/कम्प्यूटर गेम/पज़ल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/गतिविधि के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- गणित की विषयवस्तु के शिक्षण में प्रयुक्त गणित सीखने–सिखाने के विज्ञान (Pedagogy) एवं गणित शिक्षण के सैद्धान्तिक पक्ष (Methodology) से परिचित कराना।
- गणित सीखने–सिखाने के क्रम (ELPs) की प्रशिक्षुओं में समझ विकसित करते हुए उसकी उपयोगिता एवं प्रासंगिता स्पष्ट करना।
- गणित शिक्षण में शैक्षिक तकनीक की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए उसके उपयोग में दक्ष करना।
- कम्प्यूटर के माध्यम से गणित की क्रियाओं को करने में प्रशिक्षु को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को गणित की विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन करने हेतु प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–2

गणित

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- तीन अंकों तक की संख्याओं का ल0स0 एवं म0स0 (अभाज्य गुणनखण्ड एवं भागविधि)
- व्यंजक में प्रयुक्त जोड़, घटाना, गुणा, भाग के संकेतों तथा कोष्ठकों का सरलीकरण।
- प्राकृतिक, पूर्ण, पूर्णांक तथा परिमेय संख्याओं की अवधारणा ।
- पूर्ण संख्याओं पर संक्रियाओं (जोड़, घटाना, गुणा और भाग) के प्रगुण।
- पूर्णांक तथा परिमेय संख्याओं पर गणितीय संक्रियाएं तथा इनके प्रतिलोम तथा तत्समक (योगात्मक तथा गुणात्मक)।
- समीकरण तथा सर्वसमिका का अर्थ।
- रेखीय समीकरण (एक चर में) का हल एवं इस पर आधारित प्रष्न ।
- व्यंजकों का गुणनफल तथा सर्वसमिकाएँ।
- क्षेत्रफल, आयतन और धारिता की संकल्पना तथा इकाई ।
- त्रिभुज, आयत एवं वर्ग का क्षेत्रफल ।
- अवर्गीकृत आंकड़ों की बारम्बारता बंटन तथा आँकड़ों का आयत चित्र द्वारा प्रदर्षन एवं निष्कर्ष निकालना।
- सर्वांगसमता तथा समरूपता।
- त्रिभुज के सन्दर्भ में सर्वांगसमता की शर्तें ।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को गणित के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- आगमन विधि तथा निगमन विधि की समझ विकसित करने के लिये गतिविधि/मॉडल/सामग्री बनाना।
- तीन अंकों तक की संख्याओं का ल0स0प0 एवं म0स0प0 समझाने हेतु गतिविधि/मॉडल/सामग्री बनाना।
- व्यंजक में प्रयुक्त जोड़, घटाना, गुणा, भाग के संकेतों तथा कोश्ठकों के सरलीकरण हेतु सामग्री बनाना।
- प्राकृतिक, पूर्ण, पूर्णांक तथा परिमेय संख्याओं की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।
- गणितीय संक्रियाओं (जोड़, घटाना, गुणा और भाग) हेतु गतिविधि/मॉडल/सामग्री बनाना।
- समीकरण तथा सर्वसमिका का अर्थ स्पष्ट करने हेतु सामग्री बनाना।

www.dietmathura.org

Downloaded From www.dietmathura.org

- रेखीय समीकरण (एक चर में) का हल करने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।
- क्षेत्रफल, आयतन और धारिता की संकल्पना स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।
- त्रिभुज, आयत एवं वर्ग के क्षेत्रफल को ज्ञात करने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।
- अवर्गीकृत आंकड़ों की बारम्बारता, माध्यिका तथा औसत स्पष्ट करने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।
- सर्वांगसमता तथा समरूपता समझाने हेतु मॉडल/सामग्री बनाना।

www.dietmathura.org

सामाजिक अध्ययन

उद्देष्य

- प्रशिक्षुओं में सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु की संज्ञानात्मक समझ विकसित करना एवं विषयवस्तु की समीक्षा एवं समालोचना करने में सक्षम बनाना।
- प्रासंगिक स्थानीय स्मारकों/संग्रहालयों/पर्यटन स्थल आदि को, विषयवस्तु को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाना।
- सामाजिक अध्ययन में शिक्षण की विधाओं, संचार माध्यमों का प्रयोग एवं मूल्यांकन की विधियों से परिचित होकर कक्षा–शिक्षण में उनके उपयोग हेतु सक्षम बनाना।
- प्रशिक्षु को दैनिक जीवन की गतिविधियों, घटनाओं के माध्यम से सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में सक्षम बनाना।
- सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु को चार्ट/मानचित्र/सूचना एवं संचार प्रौधोगिकी (आई0सी0टी0) के माध्यम से रूचिकर तरीके से प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु से विषयवस्तु से सम्बन्धित सामग्रियाँ/मॉडल तैयार कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न एजुकेशनल सॉफ्टवेयर/गेम/प्रयोगों के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को सामाजिक अध्ययन की विभिन्न विषयवस्तुओं के सतत् मूल्यांकन प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना।
- सामाजिक अध्ययन के विषयवस्तु को शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों जैसे अभिनय, समूह–चर्चा, पैनल–चर्चा, वाद–विवाद, समस्या समाधान, भ्रमण, प्रोजेक्ट विधि आदि के उपयोग हेतु सक्षम बनाना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–2

सामाजिक अध्ययन

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- भारतवर्ष में प्रथम साम्राज्य की स्थापना–मौर्यकाल, गुप्तकाल, वर्धनवंश।
- सामन्तवाद कालीन भारत–राजपूतों का उदय, प्रमुख राजवंश एवं उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश–चालुक्य, पल्लव, चोल, राष्ट्रकूट एवं उनकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां।
- अरब में इस्लाम धर्म का उदय, भारत में इसका आगमन व प्रभाव, तुर्क आक्रमण–मुहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनवी, मोहम्मद गोरी के आक्रमण व उनका प्रभाव।
- सल्तनतकालीन भारत–दिल्ली सल्तनतः स्थापना एवं सुदृढ़ीकरण–दास या गुलामवंश, खिलजीवंश, तुगलक वंश–दक्षिण में बहमनी व विजयनगर राज्य की स्थापना। सल्तनत का विघटन–मंगोल आक्रमण व उसका प्रभाव–तैमूर व चंगेज खॉ, सैय्यद वंश व लोदी वंश।
- सल्तनत कालीन उपलब्धियां–प्रशासनिक, सांस्कृतिक, कलात्मक साहित्यिक, आर्थिक, सल्तनतकालीन समाज, भक्ति आंदोलन व सूफीमत।
- सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा व प्राकृतिक शक्तियों का मानव जीवन पर प्रभाव, चन्द्रमा की कलाएं, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण।
- पृथ्वी के प्रमुख परिमण्डल–स्थलमंडल, वायुमंडल, जलमंडल, जीवमण्डल।
- स्थल मंडल–पृथ्वी की आंतरिक संरचना, शैल के प्रकार।
- धरातल के रूप बदलने वाले कारक–आंतरिक, पटलविरूपणी बल, आकस्मिक बल, (वलितपर्वत, ज्वालामुखी पर्वत, भूकम्प, प्रकार एवं प्रभावित क्षेत्र)।
- बाह्यबल अनाच्छादन–अपक्षय, अपरदन एवं इनसे बनने वाली भू–आकृतियां।
- वायुमण्डल–संघटन एवं संरचना, तापमान, वायुदाब, वायुदाबपेटियाँ, वायुमंडल की आर्द्रता।
- पवन के प्रकार–स्थायी एवं अस्थायी (व्यापारिक, पछुआ, ध्रुवीय और मानसूनी), चक्रवात एवं प्रति चक्रवात।
- जलमण्डल–समुद्र व उसकी गतियां–समुद्री धारायें तथा उनका तटवर्ती क्षेत्रों पर प्रभाव, ज्वार–भाटा।
- हमारा संविधान :–
  - संविधान किसे कहते हैं ?
  - संविधान के गठन की भूमिका।
  - संविधान का गठन।
  - संविधान की प्रस्तावना एवं विशेषताएँ।
- नागरिकता
- मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य

www.dietmathura.org

- नीति निदेशक तत्व
- उपभोक्ता जागरूकता–उपभोक्ता शोषण के प्रकार, उपभोक्ताओं के अधिकार और कर्तव्य, उपभोक्ता सुरक्षा के उपाय।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान–भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएं व महत्व, भारतीय कृषि में उत्पादकता, हरित क्रांति व इसका प्रभाव, आर्थिक विकास, कृषि विकास हेतु सरकार द्वारा अपनाए गये उपाय–भारतीय कृषिनीति।
- मुद्रा :– मुद्रा का अर्थ एवं प्रकार, साख मुद्रा, चेक, बैंक ड्राफ्ट, प्रतिज्ञा पत्र, हुण्डी, ग्रेशम का नियम, मुद्रा स्फीति, मुद्रा अपस्फीति, मुद्रा संकुचन, मुद्रा का अवमूल्यन–अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय रूपये का मूल्य, भारत की मौद्रिक नीति।
- भारत का औद्योगिक विकास, प्रमुख उद्योग–लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, भारत की नई औद्योगिक नीति, बहुराष्ट्रीय कम्पनियां।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को सामाजिक अध्ययन के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- अशोक के प्रमुख स्तंभ लेख, शिलालेख केन्द्रों को मानचित्र/मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित करना।
- वायुदाब पेटियाँ, समुद्री धाराओं को मानचित्र/मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित करना।
- अशोक की कलिंग विजय, महमूद गजनवी के आक्रमण, बहमनी व विजय नगर साम्राज्य को मानचित्र/मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित करना।
- मूल अधिकारों पर सचित्र चार्ट तैयार करें।
- खाद्य सामग्री में मिलावट व घटतोली पर कहानी, लेख, मॉडल, वीडियो क्लिप तैयार करें।
- प्रमुख देशों की मुद्राओं की तुलना में भारतीय रूपये का मूल्य अंकित करते हुए चार्ट तैयार करें।
- अपने शहर के किसी ऐतिहासिक इमारत का भ्रमण कर उस पर एक प्रोजेक्ट तैयार करें।
- भक्ति आंदोलन के सुधारकों पर एक फोटो एलबम बनाए।
- वर्तमान सार्वजनिक वितरण प्रणाली अलाउद्दीन खिलजी की व्यवस्था से कितना मेल खाती है? रिर्पोट तैयार कीजिए।
- चन्द्र कलाएं, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण पर मॉडल।
- निम्न बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए उपभोक्ता जागरूकता पर एक रिर्पोट तैयार करें–
  - झूठे व भ्रामक विज्ञापन से उपभोक्ता का शोषण
  - उपभोक्ता फोरम
- किन्ही दस वस्तुओं के 10 वर्ष पूर्व व वर्तमान में हुए मूल्य परिवर्तन पर पॉवर प्वाइंट प्रजेटेशन तैयार करें।
- विभिन्न बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की सूची बनाकर उसके उद्गम स्थान व उनके द्वारा उत्पादित होने वाली वस्तुओं पर एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करें।

www.dietmathura.org

हिन्दी

उद्देश्य

- मनुष्य के जीवन में भाषा की भूमिका को समझाना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों के भाषा सीखने की प्रक्रिया से अवगत कराना एवं इस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करना।
- विषयवस्तु से सम्बधित शिक्षण–सामग्री तैयार करने के लिए प्रशिक्षित करना। हिन्दी भाषा की विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- हिन्दी भाषा की विषयवस्तु में प्रयोग की गयी सामग्री को बच्चों द्वारा परिवेश से एकत्रित कराने एवं दिये गये भावों को बच्चों से प्रस्तुत कराकर उनकी विषय–वस्तु में रुचि उत्पन्न कराने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को बच्चों को पढ़ने, लिखने एवं समझने के लिए प्रेरित करने हेतु कहानियॉं/ कविता बनाने एवं प्रस्तुत करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को संचार प्रौद्योगिकी एवं अन्य शिक्षण विधाओं के माध्यम से बच्चों के पठन कौशल विकास (शुद्ध उच्चारण) के लिए प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षु को भाषा शिक्षण का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कराने में प्रशिक्षित करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण, शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। कक्षा में कहानी का उपयोग सिखायें। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए, साथ ही उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, बताया जाए। यथासम्भव सूचना तकनीक/कम्प्यूटर के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग विधि सीख सके।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–2

हिन्दी

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- कहानी, लोककथा, रोचक प्रसंगों को ध्यानपूर्वक सुनना व याद करना।
- परिवेशीय विषयों, सामाजिक घटनाओं, स्व अनुभवों पर चर्चा।
- गद्य व पद्य के अंशों को शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना, बोलना।
- स्वतंत्र (मौखिक एवं लिखित) अभिव्यक्ति।
- स्तरानुसार गद्य–पद्य में शब्दों, वाक्यांशों, विराम चिन्हों एवं समान ध्वनियों को समझना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सामासिक पदों की पहचान व प्रयोग।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग तथा काल को पहचानना।
- पाठ्यवस्तु का मौन वाचन करते हुए उसमें निहित विचारों, भावों एवं तथ्यों को समझना।
- शिक्षक के निर्देशानुसार छोटे–छोटे वाक्य लिखना।
- औपचारिक अनौपचारिक पत्र लिखना।
- परिचित विषयों पर मौलिक रूप से लिखना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को हिन्दी के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, जानकारी एवं घटनाओं के अन्तः सम्बन्धों को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, खेल, गतिविधि, दृश्य–श्रव्य(वीडियो/आडियो), सामग्री, प्रयोग तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- कहानी, लोककथा के संग्रह तैयार करना।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सामसिक के विभेद हेतु चार्ट/मॉडल बनाना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग को चार्ट/मॉडल के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- विभिन्न शब्दों के विभिन्न रूपों (संज्ञा, सर्वनाम .....) को चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना।
- पत्रों के प्रकार एवं उनमें मूलभूत अन्तर को चार्ट/मॉडल के माध्यम से स्पष्ट करना।
- समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं से कक्षा शिक्षण के लिये उपयोगी सामग्री का संकलन तैयार करना।

www.dietmathura.org

अंग्रेजी

Objectives

The goal of this course is to build confidence in Trainee-teachers to use the Language freely and develop strategies for young learners based on pedagogic principles.

Trainee-teachers:

- To enable trainee teacher to understand composition, nature and classroom transaction of English language.
- To enable trainee teacher to understand subject content of English language.
- To make trainee teacher able to prepare TLM for teaching various components of content of English.
- To train trainee teacher to present content material in an interesting way and use of ICT.
- To make trainee teacher able to teach the content through various educational softwares/language games/applications.
- To train trainee teacher on CCE of English language learning and pronunciation.

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–2

अंग्रेजी

1. **Theoretical Aspects -**
   - Different approach and methods of teaching English.
   - Bilingual apporach.
   - Dr. West's new Method.
   - Audio-video method.
   - Language games.
2. **Classroom Teaching: Content**
   - English in our daily lives:-
     - Some general Greetings
     - Introducing English alphabet with relevant names of animals, birds, flowers, fruits, vegitables, plants etc.
     - Number names (1-100)
   - Oral practice of simple sentences prescribed for Standard. 3, 4 & 5.
   - Recitation of Nursery rhymes and poem with a rhythm & intonations.
   - Writing practices:
     - Penmanship (hand writing)
     - Words (spelling)
   - Grammar
     - Sentences : Kinds and Parts of a sentence
     - Punctuation
     - Determiners of Noun: Article
   - Conversational
     - Class room instructions
     - Self-introduction
   - Pronunciation: Practice of reading Simple sentences using correct Phonemes, Syllable, and stress (from text books of Standard. 3, 4 & 5).
4. **Content specifications**
   - Viva-voce
     - Self-introduction
     - Description (of a given Picture/ Landscape)
     - Narration
     - Extempore story writing on any one of the topics given.
   - Vocabulary of 750 words(prescribed for Std. 3-8).
   - Story teaching: Steps of story teaching.
   - Grammar
     - Noun: Kinds and Gender.
     - Determiners of noun:
       - Possessives (My, Our, Your, His, Her, Its etc.)
       - Demonstrative (This, That, These, Those)
       - Distributive (Each, Every, Either, Neither)
       - Determiners of number/quantity (few, some, much)
     - Pronoun.
     - Adjectives & degree of comparisons.
     - Verb: Use of Verb in present, past and future.
   - Sentences : Transformation of sentences
     - Affirmative to negative sentences

www.dietmathura.org

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

उद्देश्य

- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दक्ष बनाने में सक्षम करना।
- समस्त विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, समय का सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करेंगे।
- विभिन्न प्रकार के समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों के द्वारा प्रशिक्षुओं में शैक्षिक गुणों का विकास।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करना।
- समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत समाहित विषयों के महत्व से अवगत होकर बच्चों को उनमें दख बनाने में सक्षम करना।
- सम्बन्धित विषयों के शिक्षण द्वारा बच्चों में कलात्मक प्रवृत्ति, श्रम का बोध, आत्मनिर्भरता, हस्तकौशल, अनुशासन, सेवाभाव, समय के सदुपयोग जैसे गुणों का विकास करना।
- प्रशिक्षुओं में रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में स्वरोजगार सम्बन्धी कौशल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं को स्थानीय संसाधनों, अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर समाजोपयोगी वस्तुएँ तैयार करने के कौशल को विकसित करना।

नोट–समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत 'ए' गृहशिल्प एवं 'बी' कृषि व अद्यान विज्ञान' की विषय सामग्री दी गयी है। प्रशिक्षु स्वेच्दा से अपनी सुविधानुसार किसी एक ग्रुप का चयन कर सकते हैं।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–1, 2, 3 व 4

समाजोपयोगी उत्पादक कार्य

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- गृहशिल्प का अर्थ, आवश्यकता, महत्व तथा क्षेत्र।
- विभिन्न प्रकार का कपड़ा व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- पाक कला करते समय ध्यान देने योग्य बातें एवं उनकी सावधानियां।
- भोजन परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें तथा भोजन परोसना एक कला।
- सिलाई के प्रमुख टाकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- सिलाई उपकरण एवं उनका उचित प्रयोग।
- सिलाई एवं कढाई में अन्तर।
- बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, सफाई, प्रेस सम्बन्धित ज्ञान।
- गृह प्रबन्ध से संबंधित ज्ञान।
- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उर्वरकों का फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार की खादों यथा–गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी व प्रयोगा।
- नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा– देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा– हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैंबद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवं उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जियों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

'ए' – गृहशिल्प

- गृहशिल्प विषय का अर्थ, आवश्यकता, महत्व व क्षेत्र।
- भोजन की आवश्यकता, पौष्टिक तत्व तथा उसकी प्राप्ति के स्रोत तथा इनकी कमी से होने वाले रोग।
- संतुलित आहार–कुपोषण, कारण एवं निवारण।
- पाक कला–भोजन बनाते एवं परोसते समय ध्यान देने योग्य बातें व सावधानियाँ।
- गर्भवती स्त्री एवं नवजात शिशु की देखभाल, टीकाकरण।
- सिलाई एवं बुनाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- विभिन्न प्रकार के कपड़े व ऊन खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें।
- सिलाई के प्रमुख उपकरण एवं प्रमुख टाँकों का ज्ञान तथा कपड़ों पर उनका प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की धुलाई, प्रेस एवं रख–रखाव से सम्बन्धित ज्ञान।
- अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी एवं कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

'बी' – कृषि

- मिट्टी की पहचान, वर्गीकरण, कटाव, कटाव की रोकथाम।
- खाद तथा उर्वरकों का महत्व, तुलनात्मक अध्ययन, खाद तथा उपर्सरकों का फसलों में प्रयोग।

www.dietmathura.org

- विभिन्न प्रकार की खादों यथा – गोबर की खाद, कम्पोस्ट व हरी खाद तथा जैविक खाद की तैयारी।
- नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश उर्वरकों का अध्ययन व फसलों में प्रयोग।
- विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों की जानकारी एवं प्रयोग।
- सिंचाई के लिए नालियाँ बनाना, अधिक व कम सिंचाई से होने वाली हानियाँ।
- जुताई के यंत्र यथा – देशी, मेस्टन व केयर हल आदि का तुलनात्मक अध्ययन।
- उद्यान सम्बन्धी यंत्र यथा – हैंडहो, सिकेटियर, कलम, पैबंद व चाकू का उपयोग।
- उद्यान विज्ञान एवंव उसका महत्व, भोजन में फल तथा सब्जीयों की उपयोगिता।
- कृषि व उद्यान विषय का मूल्यांकन।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- ड्राफ्टिंग कागज पर करना।
- वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग, सिलाई व कढाई करना।
    - तकिए का गिलाफ।
    - झबला, बेबीफ्राक
    - कलीदार पेटीकोट।
    - सादा पायजामा
    - रूमाल (विभिन्न प्रकार के टांकों से सजान)
    - मेजपोश
    - काज बनाने का अभ्यास
    - स्वेटर, मोजा, टोपी बनाना।
- विभिन्न प्रकार की बुनाई से नमूने बनाकर एलबम बनाना।
- किसी ड्राईक्लीनर की दुकान पर जाकर पता करें कि कपड़ों की ड्राईक्लीनिंग (सूखी धुलाई) की क्या–क्या विधियां हैं।
- धुलाई में प्रयोग आने वाले साधनों का चित्र बनाकर एक फाइल तैयार करें।
- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों में लगे पौधे की निराई–गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नाम लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पौधे का उपयोग हम किस रूप में करते है। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यन्त्रों की देशी तथा आधुनिक यन्त्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटास तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

गृहशिल्प

- भोजन के पौष्टिक तत्वों का चार्ट बनाना।
- सब्जियों का सूप, सलाद, अंकुरित अनाज का नाश्ता, आम का पना तााि चार प्रकार के मीठे एवं चार प्रकार के नमकीन व्यंजन बनाना।

www.dietmathura.org

- कक्षा–6, 7 व 8 की गृहशिल्प पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन एवं प्रश्न पत्र का निर्माण करना।
- निम्नलिखित वस्त्रों की ड्राफ्टिंग, कटिंग व सिलाई करना –
  1. रुमाल/मेजपोश
  2. झबला/बेबी फ्रॉक
  3. कलीदार पेटीकोट/सादा पैजामा
- स्वेटर, मोजा एवं टोपी बनाना।
- अनुपयोगी वस्तुओं से कोई दो उपयोगी व कलात्मक वस्तुएँ बनाना।

कृषि

- सब्जियों व फूलों के बीजों का चयन कर इनके पौधे की तैयारी करना।
- वृक्षों की पौध तैयार करना।
- गमलों एवं क्यारी में फूलों वाले तथा शोभाकारी पौधे लगाना।
- क्यारी तथा गमलों मं लगे पौधे की निराई–गुड़ाई करना।
- गमलों में खाद्य, उर्वरक, देना तथा सिंचाई करना।
- फावड़ा से खुदाई तथा खुरपा/खुरपी से निराई करना।
- आपके क्षेत्र में उगने वाले पौधों के देशी तथा वैज्ञानिक नामा लिखकर उन्हें वृक्ष, झाड़ी तथा शाक में विभाजित करें तथा दैनिक जीवन में इस पोधे का उपयोग हम किस रूप में करते हैं। चार्ट बनाकर प्रदर्शित कीजिए।
- कर्षण यंत्रों की सूची तैयार करें एवं नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश तत्वों की उपस्थिति वाले उर्वरकों की सूची तैयार कीजिए।

www.dietmathura.org

कला

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को कक्षा–शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में कला के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- कला की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- कला शिक्षा द्वारा आनन्द की अनुभूति कराना।
- कला शिक्षा द्वारा संवेदनषीलता एवं सौन्दर्यबोध की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- कला शिक्षा को जीवनचर्या एवं अन्य विषयों के साथ समाहित करने का कौषल विकसित करना।
- प्रशिक्षुओं में कला शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में कला की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सके।
- प्रशिक्षु को बच्चों में सृजनशीलता को विकसित करने की गतिविधियाँ/कार्य सिखाना।
- कला का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–1, 2, 3 व 4

कला

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- दृश्यकला
  - स्वतंत्र भाव प्रकाषन, सौन्दर्यानुभूति, रंगों का ज्ञान, रेखाओं का ज्ञान, आकार–प्रकार का ज्ञान देना।
- हस्तकला
  - अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं का निर्माण, कोलाज निर्माण, मिट्टी के खिलौने बनवाना।
  - चित्रकला के विभिन्न तरीकों एवं सामग्री का प्रयोग जैसे–पोस्टर, कलर, वाटर कलर, पेन्सिल एवं रबड़, पेन एवं स्याही आदि।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को कला के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विद्यालय तथा घर की साज–सज्जा हेतु सामग्री।
- हस्तकला के विभिन्न तरीकों–कोलाज, मिट्टी के सामान, पेपर कटिंग, पेपर फोल्ड, चूड़ियों से विभिन्न सजावटी सामान, वाल हैंगिग, लिफाफे आदि का निर्माण।
- विभिन्न अवसरों पर चित्रकला, हस्तकला, मेंहदी, रंगोली, अल्पना आदि प्रतियोगिता करना।
- मिट्टी के खिलौने, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं को बनाना।

www.dietmathura.org

शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को स्वास्थ शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के महत्व से अवगत कराना।
- प्रशिक्षु को विभिन्न खेल एवं उनके नियमों की जानकारी देना।
- प्रशिक्षु को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में विभिन्न खेलों के प्रति झिझक को समाप्त कर सके।
- विभिन्न खेलों में बच्चों के सतत् मूल्यांकन करने में सक्षम करना।
- खेलकूद के माध्यम से स्वास्थ्य, अनुशासन, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–1, 2, 3 व 4

शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

स्वास्थ्य शिक्षा

- स्वास्थ्य शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं उद्देष्य, स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ, स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका, बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण और उसका अनुश्रवण, संक्रामक रोग एवं टीकाकरण, पोलियो एवं एड्स जैसी घातक बीमारियों के बचाव हेतु जागरूकता सम्बन्धी कार्यक्रम।
- व्यक्तिगत स्वच्छता एवं षिक्षकों द्वारा नियमित निरीक्षण।
- विद्यालयीय स्वच्छता।
- प्राथमिक चिकित्सा एवं विभिन्न दुर्घटनाओं में प्राथमिक चिकित्सा का महत्व।
- रेडक्रॉसः रेडक्रॉस का परिचय एवं उपयोगिता

शारीरिक शिक्षा

- खेल, व्यायाम तथा योग
- शरीर को वॉर्मअम करने वाली क्रियाएं यथा–इधर उधर दौड़ना।
- हाथ–पैर, धड़ का व्यायाम। कौषल के अभ्यास हेतु लम्बी कूद, ऊँची कूद, जिमनास्टिक, मार्चिंग, गेंद एवं रस्सी कूद से सम्बन्धित क्रियाएं।
- विभिन्न प्रकार की दौडः 10 मी0, 200 मी0, 400मी0, 600मी0, 800मी0 की दौड़, रिले दौड़, बाधा दौड़,।
- ध्यान एवं विभिन्न प्रकार के योगसान एवं प्राणयाम यथा–भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम–विलोम, भ्रामरी और उद्गीथ तथा उनके लाभ। लेजिम एवं डम्बल द्वारा किये जाने वाले व्यायाम।
- विभिन्न प्रकार के थ्रोः गोला फेंक, चक्का फेंक।
- खेलः
  - कबड्डी, खो–खो, फुटबाल, हॉकी, बॉलीवाल, बैडमिंटन।
  - अमरूद दौड़, छुआ छुअव्वल, एक टांग पर दौड़, चूहा–बिल्ली, गेंद–तड़ी, छाया–पकड़।
- **स्काउटिंग/गाइडिंग**
  - स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन बनने सम्बन्धित दक्षताओं हेतु प्रथम एवं द्वितीय सोपान परीक्षा।
  - कब/बुलबुल, बालवीर/वीरबाला प्रवेष एवं विकास क्रम।
  - कब/बुलबुल, प्रथम चरण–कोमल पंख।
  - कब/बुलबुल, द्वितीय चरण–रजत पंख।
  - कब/बुलबुल, तृतीय चरण–स्वर्ण पंख।
  - कब/बुलबुल, चतुर्थ चरण–हीरक पंख।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुँचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा

www.dietmathura.org

सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- प्रार्थना स्थल पर कराने के लिए नित्य सामुदायिक/राष्ट्रभक्ति गीतों का संकलन तैयार करना।
- शारीरिक व्यायाम एवं योगासनों की तैयारी एवं प्रदर्षन कराना तथा अभिलेखीकरण करना।
- प्रशिक्षु शिक्षक विभिन्न प्रकार के खेलों में से एक खेल का चयन प्रति सेमेस्टर करेगा तथा उस पर अपनी आख्या प्रस्तुत करेगा।
- सार्वजनिक स्थानों यथा–रेलवे स्टेषन, बस स्टैण्ड, मेलों में श्रमदान (समाज सेवा का कार्य) करना जैसे पानी पिलाना व शांति व्यवस्था बनाये रखना।
- वृक्षारोपण करना, दीवारों पर सद्वाक्य लिखना तथा जन जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- विभिन्न प्रकार के योगासनों पर चार्ट/मॉडल तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार की चिकित्सा पद्यतियों पर मॉडल/चार्ट आदि तैयार करना।

www.dietmathura.org

संगीत

उद्देश्य

- प्रशिक्षु को लय, गति, यति, आरोह–अवरोह का ज्ञान कराना।
- प्रशिक्षु को बच्चों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न करने का प्रशिक्षण देना।
- संगीत की विविध विधाओं एवं विषयवस्तु की समझ विकसित करना।
- संगीत के माध्यम से आनन्द की अनुभूति कराना।
- संगीत शिक्षा द्वारा संवेदनषीलता की अन्तर्दृष्टि विकसित कराना।
- प्रशिक्षुओं में संगीत शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता तथा नैतिकता विकसित करने में प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षुओं को इस प्रकार से प्रशिक्षित करना कि वह बच्चों में संगीत की विविध विधाओं के प्रति झिझक को समाप्त कर सकें।
- प्रशिक्षु को बच्चों में गीत/संगीत को विकसित करने की गतिविधियाँ/क्रिया–कलाप सिखाना।
- संगीत का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण देना।

प्रशिक्षण प्रक्रिया/विधियाँ

प्रशिक्षुओं के मध्य विषयवस्तु को अधिकतर प्रयोग की जा सकने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से रखने का प्रयास किया जाए। प्रशिक्षण शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित हो। प्रशिक्षण के समय सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं को सहभागी बनाया जाए। साथ ही, उन्हें अपने शिक्षण में बच्चों का सहयोग एवं उनकी सहभागिता सुनिश्चित करनी है, यह बताया जाए। यथासम्भव आई0सी0टी0 के माध्यम से विषयवस्तु को प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया जाए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षु का निर्धारित प्रारूप पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाए, जिससे कि वह इस प्रक्रिया से परिचित हो जाए तथा इसकी प्रयोग–विधि सीख सकें।

www.dietmathura.org

सामान्य विषय–1, 2, 3 व 4

संगीत

कक्षा–शिक्षणः विषयवस्तु

- संगीत के परिभाषिक शब्द–स्वर, स्वरों के प्रकार, नाद, आरोह, अवरोह, पकड, आलाप, लय, लय के प्रकार आदि का ज्ञान।
- संगीत गायन में सहायक तालों का ज्ञान यथा – तीनताल, झपताल, रूपकताल, कहरवा ताल, दादरा, एकताल व चारताल का परिचयात्मक ज्ञान।
- संगीत–वन्दना, भजन, स्थानीय लोकगीत, ऋतुओं एवं मौसम सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय एकता (देशगान, राष्ट्रगान) सम्बन्धी गीतों का ज्ञान।
- भारतीय संगीतज्ञों का जीवन परिचय।
- त्य/नाटक–लोकनृत्य, स्थानीय नृत्य, भावनृत्य, समसामयिक समस्याओं से, पाठयवस्तु से एवं देषभक्ति से सम्बन्धित नाटक करवाना।

प्रयोगात्मक कार्य/सत्रीय/प्रोजेक्ट कार्य/मॉडलः प्रशिक्षु शिक्षकों को संगीत के प्रत्येक पाठ में अन्तर्निहित ज्ञान, संकल्पना को बच्चों तक पहुॅचाने के लिए प्रोजेक्ट, मॉडल, Game, Video clip, Audio clip, Experiment तैयार करने का कार्य दिया जायेगा। तैयार किये जा सकने वाले मॉडल/प्रोजेक्ट की सांकेतिक सूची सहायतार्थ निम्नवत् है। शिक्षकगण अन्य विषयों पर भी मॉडल/प्रोजेक्ट का निर्धारण कर सकते हैं।

- विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन करना।
- विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवसरो पर गाये जाने वाले गीतों का संकलन।
- विभिन्न प्रकार के नृत्यों का एलबम तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकनृत्यों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के लोकगीतों पर चार्ट/मॉडल/वीडियो/ऑडियो क्लिप तैयार करना।
- विभिन्न प्रकार के वाद् यंत्रों का एलबम तैयार करना।

www.dietmathura.org